गुरू एवं गोविन्द

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

ज्ञान के बिना मानव अधूरा है। ज्ञान ही मानव को पूर्ण मानव बनाता है। अन्य प्राणियों से ज्ञान ही एक ऐसा तत्व है जो मानव को अलग करता है। ज्ञान कैसे प्राप्त हो यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। गुरु ज्ञान का दीपक मानव के अन्दर जलाता है, जिससे मानव पूर्ण मानव बनता है। जितने भी महापुरुष हुये हैं उनके भीतर ज्ञान का दीपक जलाने वाले कोई न कोई गुरु रहे हैं। शिवाजी को शिवाजी बनाने वाले समर्थ गुरु रामदासजी, स्वामी विवेकानन्द को विवेकानन्द बनाने वाले रामकृष्ण परमहंस थे। सरस्वती मां ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है। उनकी आराधना से ज्ञान प्राप्त होता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊंचा बताया गया है। गुरु ही ईश्वर का ज्ञान कराता है। कबीरदासजी ने लिखा है–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

प्राचीनकाल में मानव जीवन को चार भागों में विभक्त किया गया था– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर विद्याध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करता था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली थी। यह व्यवस्था बहुत ही वैज्ञानिक रीति पर आधारित थी। मानव जीवन की आयु सौ वर्ष मानकर पच्चीस–पच्चीस वर्षों में विभक्त कर दी गयी थी। इस आश्रम में शिष्य गुरु के सान्निध्य में जाकर के शिक्षा प्राप्त करता था। भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि ज्ञान अथवा विद्या से मुक्ति प्राप्त होती है। समाज में दो प्रकार के लोग होते हैं। एक तो वे लोग जो प्रत्येक कार्य समझकर बुद्धि से करते हैं और दूसरे वे लोग जो बिना समझे कार्य करते हैं। जो कर्म समझ कर किया जाता है वही कर्म शक्तिशाली तथा सफल होता है। मनु के अनुसार जन्म से सभी मनुष्य शूद्र उत्पन्न होते हैं परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान और कर्म से वे द्विज बन जाते हैं। शिक्षा

मानव का सर्वांगीण विकास करती है। गुरु के आश्रम में शिष्य बौद्धिक और मानसिक अनुशासन सीखता है। मानव का जीवन ज्ञान से ही धर्म प्रवण, नैतिक मूल्यों से युक्त, उच्च आदर्शों से संवलित और बहुमुखी व्यक्तित्व से युक्त होता है। अतः धार्मिक वृत्तियों का उत्थान, चरित्र का उत्थान, व्यक्तित्व का उत्थान, सामाजिक उत्तरदायित्वों का निष्पादन और सांस्कृतिक जीवन का उत्थान शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली इस उद्देश्य को सफल करने में पूर्ण समर्थ थी।

प्राचीनकाल में मौखिक अध्यापन प्रचलित था। विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षार्जन करता था। गुरु का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान था। प्राचीनकाल में गुरु और शिष्य का संबंध पिता और पुत्र जैसा था इसलिए शिष्य का यह कर्त्तव्य था कि वह गुरु के प्रति द्रोह न करे। शिष्य अथवा विद्यार्थी के लिए विद्यार्जन के प्रति निष्ठावान तथा जिज्ञासु होना आवश्यक था। गुरु उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति और कर्त्तव्य बुद्धि की जानकारी रखता था। प्रतिभावान और सुयोग्य शिष्य को चुनना गुरु की कुशलता का परिचायक था। गुरु की यह विशेष कुशलता होती थी कि वह मंद बुद्धि छात्र के मस्तिष्क में ज्ञान का मंत्र फूंककर उसे विद्या सम्पन्न बना दे। गुरुकुल आश्रम में शिष्य को सात्विक प्रवृत्ति से रहना पड़ता था। शिष्य का यह कर्त्तव्य था कि वह असत्य भाषण न करे, प्रतिदिन स्नान करे, मधुमांस का सेवन न करे, दिन शयन, तेल मर्दन, क्रोध, लालच, मोह इत्यादि न करे। उसको अनेक आचार संबंधी नियम भी पालन करने पड़ते थे। शिष्य को गुरु के साथ जाना चाहिए, उसे स्नान करने में सहायता देनी चाहिए, उसके शरीर को दबाना चाहिए, गुरु को प्रसन्न करने वाले कार्य करने चाहिए, अपने पैरों को आगे कर गुरु के समीप नहीं बैठना चाहिए, अपने पाव नहीं फैलाना चाहिए, उच्च स्वर से गुरु के सामने बोलना नहीं चाहिए, जोर से हंसना, जँभाई लेना, अंगुली नहीं चटकाना चाहिए, बुलाने पर तुरंत गुरु के पास जाना चाहिए, गुरु के सामने नीचे आसन पर बैठना चाहिए, गुरु के सो जाने के उपरान्त सोना और उनके जगने के पहले जगना चाहिए। गुरुकुल में विद्यार्थियों के साथ समानता का व्यवहार होता था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य बालक समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे। विद्यार्थियों के मध्य धनी और निर्धन की भावना के लिए भी स्थान नहीं था। सभी ब्रह्मचारियों को चाहे वे राजकुल में उत्पन्न हो अथवा अत्यंत निर्धनकुल में उत्पन्न

हो, समान रूप से अध्यवसायी होना पड़ता था। मृदु स्वभाव तथा पर दुःख कातरता की अभिवृद्धि आदि के लिए उसे प्राणीवध से सर्वथा दूर रहकर अहिंसा व्रत का पालन करना पड़ता था।

विनम्रता और अनुशासन का पाठ गुरु शिष्य को सिखाता था। विद्या विनम्रता से ही आती है। भगवान राम ने लक्ष्मण को रावण के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा था। लक्ष्मण जब रावण के पास गये तो उसके सिर के पास खड़े हो गये। रावण ने लक्ष्मण की तरफ देखा ही नहीं। लक्ष्मण वापस आ गये। भगवान राम ने लक्ष्मण से पूछा कि वहां जाकर कहां खड़े थे। लक्ष्मण ने कहा रावण के सिर के पास। भगवान राम ने कहा ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी के सिर के पास नहीं बल्कि पैर के पास खड़ा होना चाहिए। लक्ष्मण जब पुनः रावण के पास जाकर उसके पैर के पास प्रणाम करके खड़े हुए तब रावण ने उन्हें ज्ञान और शिक्षा दी। अतः ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरु के प्रति आदर का भाव होना आवश्यक है। गुरू और गोविन्द दोनों पूजनीय हैं।